Annapurna Chalisa

॥ दोहा ॥

विश्वेश्वर पदपदम की रज निज शीश लगाय ।
अन्नपूर्णे, तव सुयश बरनौं कवि मतिलाय ।

॥ चौपाई ॥

नित्य आनंद करिणी माता, वर अरु अभय भाव प्रख्याता ।
जय ! सौदर्य सिधु जग जननी, अखिल पाप हर भव-भय-हरनी । 1 ॥

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि, संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि ।
काशी पुराधीश्वरी माता, माहेश्वरी सकल जग त्राता । 2 ॥

वृषभारुढ नाम रुद्राणी, विश्व विहारिणि जय ! कल्याणी ।
पतिदेवता सुतीत शिरोमणि, पदवी प्राप्त कीन्ह गिरी नंदिनि । 3 ॥

पति विछोह दुःख सहि नहिं पावा, योग अग्नि तब बदन जरावा । 4 ॥
देह तजत शिव चरण सनेहू, राखेहु जात हिमगिरि गेहू ।

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो, अति आनंद भवन मँह छायो ।
नारद ने तब तोहिं भरमायहु, ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु । 5 ॥

ब्रहमा वरुण कुबेर गनाये, देवराज आदिक कहि गाये ।
सब देवन को सुजस बखानी, मति पलटन की मन मँह ठानी । 6 ॥

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या, कीहनी सिद्धि हिमाचल कन्या ।
निज कौ तब नारद घबराये, तब प्रण पूरण मंत्र पढ़ाये । 7 ॥

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ, संत बचन तुम सत्य परेखेहु ।
गगनगिरी सुनि टरी न टारे, ब्रहां तब तुव पास पधारे । 8 ॥

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा, देहुँ आज तुव मति अनुरुपा ।
तुम तप कीन्ह अलौकिक भारी, कष्ट उठायहु अति सुकुमारी । 9 ॥

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों, है सौगंध नहीं छल तोसों ।
करत वेद विद ब्रहमा जानहु, वचन मोर यह सांचा मानहु । 10 ॥

तजि संकोच कहहु निज इच्छा, देहौं मैं मनमानी भिक्षा ।
सुनि ब्रहमा की मधुरी बानी, मुख सों कछु मुसुकाय भवानी । 11 ॥

बोली तुम का कहहु विधाता, तुम तो जगके स्रष्टाधाता ।
मम कामना गुप्त नहिं तोंसों, कहवावा चाहहु का मोंसों । 12 ॥

दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा, शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा ।
सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये, कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये । 13 ॥

तब गिरिजा शंकर तव भयऊ, फल कामना संशयो गयऊ ।
चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा, तब आनन महँ करत निवासा । 14 ॥

माला पुस्तक अंकुश सोहै, कर मँह अपर पाश मन मोहै ।
अन्नपूर्णे ! सदापूर्णे, अज अनवघ अनंत पूर्णे । 15 ॥

कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ, भव वभूति आनंद भरी माँ ।
कमल वलोचन वलिसति भाले, देवि कालकि चण्डि कराले । 16 ॥

तुम कैलास मांहि है गरिजा, वलिसी आनंद साथ सधिुजा ।
स्वर्ग महालक्ष्मी कहलायी, मर्त्य लोक लक्ष्मी पदपायी । 17 ॥

वलिसी सब मँह सर्व सरुपा, सेवत तोहि अमर पुर भूपा ।
जो पढ़हिहि यह तव चालीसा फल पाइंहहि शुभ साखी ईसा । 18 ॥

प्रात समय जो जन मन लायो, पढ़हिहि भक्ति सुरुचि अघकियो ।
स्त्री कलत्र पति मित्रि पुत्र युत, परमैश्रवर्य लाभ लहि अद्भुत । 19 ॥

राज वमिुख को राज दविावै, जस तेरो जन सुजस बढ़ावै ।
पाठ महा मुद मंगल दाता, भक्त मनोवांछति नधिि पाता । 20 ॥

॥ दोहा ॥

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावैंगे माथ ।
तनिके कारज सद्धि सब साखी काशी नाथ ॥